इस मास में विशेषः साधना दीक्षा

कायाकल्प धनवन्तरी प्रयोग

धनवन्तरी जयंती- 18 अक्टूबर

मनुष्य जीवन मन और **तन** दोनों के **सहयोग** से ही **गतिशील** होता है, दोनों में से किसी एक का भी **सन्तुलन** बिगड़ जायें तो वही **रोग** कहलाता है। **शारीरिक** और **मानसिक सबलता** और **पुष्टि** अर्थात **मन** एवं **तन** दोनों को ही **चैतन्य** करने की यह **साधना** है। इस **साधना** में जहां **स्वास्थ्य का प्रयोजन** सिद्ध होता है, वहीं मन में निरन्तर **प्रफुल्लता, जोश, आशा** एवं **हिम्मत** का **संचार** होता है, **आत्म विश्वास** का **संचार** होता है, जिसके द्वारा **स्वतः** ही **कई रोग** समाप्त हो जाते हैं।

रूप चतुर्दशी गरिमामयी सौन्दर्य साधना

रूप चतुर्दशी- 19 अक्टूबर

ऋषियों-मुनियों द्वारा प्रदत्त यह **साधना असुन्दरता** के कारण व्याप्त **हीन भावना** को मन से हमेशा-हमेशा के लिये दूर किया जा सकता है। **गरिमामयी सौन्दर्य साधना** के द्वारा व्यक्ति का **बाह्य** और **अन्त** मनः **सौन्दर्यवान, संस्कारनवान, सम्मोहन चुम्बकत्व** को प्राप्त कर पाता है। **सौभाग्यशाली साधक** ही **गरिमामयी सौन्दर्य, सम्मोहन, आकर्षण, तेजस्वी, ओजस्वी** युक्त **पूर्ण व्यक्तित्व** को प्राप्त कर पाता है।

सूर्य षष्ठी साधना

छठ पूजा- 27 अक्टूबर

यह **साधना** हर प्रकार के **संकट निवारण** के लिये **सहायक** है। किसी **तंत्र प्रयोग** या **कुवचनों** के **श्राप** से ग्रसित जन्य **कष्ट का निवारण** इस **साधना** से सम्भव है। **सन्तानहीनता, नपुंसकता का नाश** होता है। **कुण्डलिनी जागरण** तथा **सम्मोहन आकर्षण** हेतु **सूर्य साधना** अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। **मृत्यु पर विजय** तथा **रोग निवारण** के लिये यह **साधना राम बाण** की तरह **अचूक** है। जीवन में **सम्पूर्ण आरोग्यता, धन-धान्य, संतान प्राप्ति, ऐश्वर्यता, यश-कीर्ति, तेजस्वीता** युक्त होता है और किसी भी **क्षेत्र** में **न्यूनता** नहीं रहती।

देव प्रबोधिनी एकादशी साधना

देवत्थान एकादशी- 01 नवम्बर

इस **साधना** से व्यक्ति की **मनेच्छाएं** स्वतः ही पूर्ण होने लगती हैं, उसके **कार्य** अधिक **परिश्रम** किये बिना ही **सहज रूप** से सम्पन्न होने लगते हैं, उसके कार्य में आने वाली **बाधाओं का नाश** होता है, यह **साधना सम्पूर्ण पापों का नाश** करने वाली, **कल्याणकारी** और सभी कामनाओं को पूर्ण करने वाली एक मात्र **साधना** है, इस **साधना** के द्वारा व्यक्ति में वे **सभी शक्तियां** समाहित हो जाती हैं, उसे सभी **कार्यों** में **सफलता** मिलती है चाहे वह **भौतिक पक्ष** हो या **आध्यात्मिक पक्ष,** उसे **पूर्णता** प्राप्त होती ही है।

साधना एक **साधक** के जीवन का **अभिन्न अंग** है, जो साधक समय-समय पर स्वयं व सामूहिक रूप से साधना सम्पन्न करते हैं, वे सदैव **सद्गुरूदेव** के **हृदय** में एक **विशिष्ट स्थान** प्राप्त करते हैं। ये **विशिष्ट साधनायें** सम्पन्न करने के लिए **कैलाश सिद्धाश्रम** में सम्पर्क करें।